ढलान के आड़े बुवाई करें

खेती री बातां

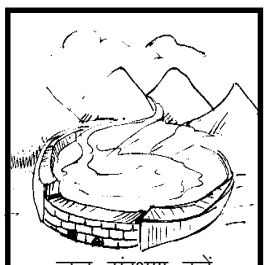
जल संरक्षण करें

वर्ष–15 अंक–7 मासिक पत्रिका आर.एन.आई – 70296/98 5 जुलाई 2012 वार्षिक शुल्क –12 रूपये

राजस्थान किसान आयोग ने सौंपी मुख्यमंत्री को अपनी प्रथम अंतरिम रिपोर्ट

मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत को राजस्थान किसान आयोग के अध्यक्ष श्री नारायणसिंह किसान आयोग की अंतरिम रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुए

जयपुर, 21 जून। राजस्थान किसान आयोग के अध्यक्ष श्री नारायण सिंह ने मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत को मुख्यमंत्री कार्यालय में आयोग की प्रथम अंतरिम रिपोर्ट सौंपी।

मुख्यमंत्री ने किसान आयोग द्वारा किये गये प्रयासों की सराहना की एवं इन्हें किसान हित की दिशा में एक अच्छा प्रयास बताया। आयोग के अध्यक्ष श्री नारायण सिंह ने मुख्यमंत्री को अवगत कराया कि रिपोर्ट में आयोग द्वारा कृषि विपणन, कृषि आदान व्यवस्था, फसल बीमा एवं कृषक बीमा, पशुधन बीमा, कृषि ऋण, भू–संसाधन, जल संसाधन, जैविक कृषि, कृषि तकनीकी का त्वरित प्रसार एवं अनुसरण, पशुधन स्वास्थ्य, बागवानी विकास, जनजाति क्षेत्र के कृषकों की समस्याओं सहित 16 विषयों पर बिन्दुवार अनुशंषाएं प्रस्तुत की गई हैं।

इस अवसर पर कृषि मंत्री श्री हरजीराम बुरड़क, कृषि विपणन राज्य मंत्री श्री गुरमीत सिंह कुन्नर, राज्य मंत्री (कृषि एवं पशुपालन) श्री विनोद कुमार सहित विभाग के उच्च अधिकारी एवं प्रगतिशील कृषक भी उपस्थित थे।

राजस्थान स्टेट सीड्स कार्पोरेशन लि0 ने खरीफ–2012 हेतु ग्वार की सभी प्रमाणित किस्मों (एम–83 के अतिरिक्त) की विक्रय दर रू. 39000 प्रति क्विंटल तथा तिल की दो किस्मों जी. 2 एवं जी. 3 की विक्रय दर रु. 12,600 प्रति क्विंटल निर्धारित की है।

सहकारी बैंकों से किसानों को फसली ऋण मिलेगा

जयपुर, 13 जून। मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने नाबार्ड के अध्यक्ष डॉ. प्रकाश बक्षी के साथ राज्य के वरिष्ठ अधिकारियों एवं नाबार्ड के अधिकारियों के साथ राज्य में नाबार्ड द्वारा वित्त पोषित योजनाओं की समीक्षा करते हुए कहा है कि सहकारी बैंको के माध्यम से वर्ष 2012–13 में 26 लाख किसानों को 9 हजार 431 करोड़ रूपये के अल्पकालीन फसली ऋण वितरित कराये जायेंगे।

बैठक में इस मुद्दे पर भी सहमति हुई कि सभी बैंकों के सहयोग से किसानों को स्मार्ट–कार्ड उपलब्ध कराये जायें ताकि किसानों को स्मार्ट–कार्ड द्वारा ऋण प्राप्त करने एवं रूपये आहरण करने की सुविधा मिल सके।

बैठक में ऊर्जा मंत्री डॉ. जितेन्द्र सिंह, कृषि मंत्री श्री हरजीराम बुरड़क, कृषि राज्य मंत्री श्री विनोद कुमार, नाबार्ड जयपुर के मुख्य महा प्रबन्धक तथा अन्य अधिकारीगण भी उपस्थित थे।

खरीफ अभियान 2012

ग्राम पंचायत स्तर पर आयोजित शिविरों में बड़ी संख्या में भाग लेने के लिए कृषकों का हार्दिक आभार

½25 ebZ ls 15 twu 2012½

- ★ 9174 शिविर आयोजित।
- ★ 5 लाख 81 हजार कृषकों की भागीदारी।
- ★ 3 लाख 39 हजार उन्नत बीज मिनिकिट वितरित।
- ★ 30 हजार 9 सौ मृदा स्वास्थ्य कार्ड्स वितरित हुए।
- ★ 1 लाख 3 हजार मृदा नमूने लिए
- ★ 1लाख 56 हजार व्यक्तिगत लाभार्थी कार्यक्रमों के आवेदन पत्र प्राप्त हुए।
- ★ 4 हजार 7 सौ कृषकों से स्प्रिंक्लर एवं ड्रिप के लिए आवेदन प्राप्त हुए।
- ★ 6 लाख 86 हजार फलदार पौधों हेतु कृषकों से मांग प्राप्त हुई।
- ★ 7लाख 93 हजार पशुओं का टीकाकरण।
- ★ 1लाख 33 हजार मिनरल मिक्श्चर वितरित किये गये।
- ★ 14 हजार 7 सौ कृषकों के किसान क्रेडिट कार्ड्स हेतु आवेदन तैयार कराये।
- ★ 8 हजार 9 सौ क्विंटल प्रमाणित बीज, 2 हजार 4 सौ मै. टन उर्वरक एवं 9 हजार 4 सौ मै. टन जिप्सम वितरण किया गया।
- ★ 11 हजार 4 सौ बायो–फर्टीलाइजर के पैकिट वितरित किये गये।
- ★ 16 आवेदन पत्र राजीव गांधी कृषक साथी योजना हेतु प्राप्त किये गये।

जयपुर के निकट सब्जी विपणन केन्द्र खुलेगा

जयपुर, 9 जून। कृषि मंत्री श्री हरजीराम बुड़रक ने सीकर जिले के लक्ष्मणगढ़ क्षेत्र के रूल्याणी पंचायत मुख्यालय पर दस–दस लाख रूपये की लागत से निर्मित राजीव गांधी सेवा केन्द्र व उप स्वास्थ्य केन्द्र एवं काछवा से रूल्याणी तक सड़क नवीनीकरण कार्य का लोकार्पण करने के बाद कहा कि जयपुर के निकट केन्द्रीय योजना के अन्तर्गत सब्जी विपणन, उत्पादन व पैकेजिंग की व्यवस्था के लिए एक केन्द्र बनाया जायेगा।

जयपुर के साथ इसमें सीकर जिले को भी जोड़ा जायेगा। इस केन्द्र के लिए इस वर्ष साढ़े बारह करोड़ रूपये मंजूर हुए हैं।

श्री बुरड़क ने कहा कि राज्य सरकार कृषकों को खाद व बीज उपलब्ध करा रही है तथा कृषकों को 100 करोड़ रूपये का बीज निःशुल्क दिया जा रहा है।

उन्होंने कृषकों को पानी की बचत व पानी का संरक्षण करने के लिए राज्य सरकार द्वारा संचालित बूंद–बूंद सिंचाई योजना, फव्वारा पद्धति एवं मिट्टी का परीक्षण कराकर फसल बोने व खाद एवं बीज का उपयोग करने की सलाह दी। समारोह में केन्द्रीय जनजाति मामलों के राज्य मंत्री श्री महादेव सिंह खण्डेला व स्थानीय जनप्रतिनिधियों ने भी विचार व्यक्त किये।

E mail : kheti_ri_batan@yahoo.co.in

bl vad esa——

www.krishi.rajasthan.gov.in

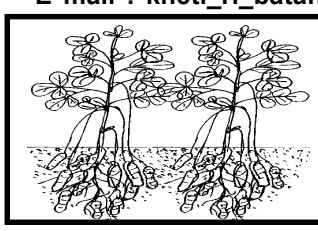
★ इस माह के कृषि कार्य...
★ परख ...
★ गुणी कमला...
पृष्ठ 2

★ टमाटर में फलछेदक का समन्वित कीट प्रबन्धन...
★ मजदूर से बना उन्नत किसान...
★ सफेद लट नियंत्रण...
पृष्ठ 3

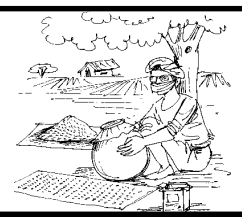
★ निरोगी बीज–अच्छी पैदावार
★ ग्वार : बदलते परिप्रेक्ष्य.....
पृष्ठ 4

दूरभाष – 5116240, 2227365/211

इस माह के कृषि कार्य

फसलोत्पादन

- ✦ बाजरा, ज्वार, मक्का के साथ मूंग, उड़द, चंवला या सोयाबीन की मिश्रित फसल लेवें।
- ✦ मूंगफली की झुमका किस्म के पौधों पर बुवाई के एक माह बाद मिट्टी चढ़ावें।

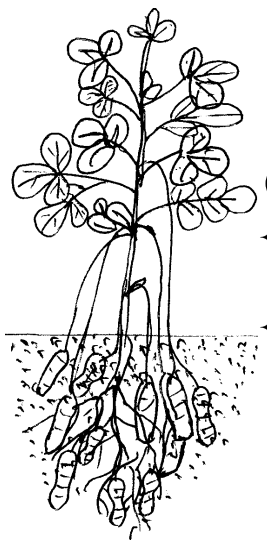

- ✦ बाजरे की प्रमुख किस्में राज 171 (एम.पी. 171), एच.एच.बी.–67, आई.सी.एम.एच. 356, आर.एच.बी. 121, सी.जे.पी. 9802 का चार किलो प्रमाणित बीज प्रति हैक्टर बोएं।
- ✦ हरे चारे के लिए ज्वार, बाजरा या मक्का तथा लोबिया को 2:1 अनुपात (ज्वार, बाजरा या मक्का की दो लाइनों के मध्य एक लाइन लोबिया) में बोने से अधिक पौष्टिक व अच्छा चारा प्राप्त होता है।

बागवानी

- ✦ बेर की फसल में यूरिया की आधी मात्रा दें।
- ✦ तैयार किये गये गड्ढ़ों में फलदार पौधों को पिण्डी सहित लगायें।
- ✦ पपीते की पौध की रोपाई करने का भी यह उचित समय है। रोपाई से पूर्व प्रति गड्ढा 10 किग्रा. अच्छी सड़ी हुई गोबर की खाद, 300 ग्राम सिंगल सुपर फास्फेट व 50 ग्राम क्यूनॉलफॉस 1.5 प्रतिशत चूर्ण मिला देवें।

सब्जियाँ

- ✦ फूल गोभी की अगेती किस्मों पूसा कार्तिकी, पूसा दीपाली की बुवाई करें।
- ✦ बैंगन में पौध रोपण के 20 दिन बाद 20 किलो नत्रजन (44 किलो यूरिया) को खड़ी फसल में देकर सिंचाई करें। संकर किस्मों में यह मात्रा 30 किलो (62 किलो यूरिया) रखें।
- ✦ टमाटर में पौध लगाने के 30 दिन बाद 30 किलो नत्रजन (62 किलो यूरिया) खड़ी फसल में देवें। संकर किस्मों में यह मात्रा 45 किलो (110 किलो यूरिया) रखें।
- ✦ फूल गोभी की इम्प्रूव्ड जापानीज, पूसा हाइब्रिड–2, पूसा हिम ज्योति किस्मों की नर्सरी तैयार करने का उचित समय है। एक हैक्टर क्षेत्र की पौध तैयार करने हेतु 375 से 400 ग्राम बीज की आवश्यकता होती है।
- ✦ पत्ता गोभी की गोल्डन एकर, प्राइड ऑफ इण्डिया किस्मों की पौध नर्सरी में पौध तैयार करें। इस हेतु 500 ग्राम बीज प्रति हैक्टर की दर से प्रयोग करें।
- ✦ कुष्माण्ड कुल की सब्जियां लौकी, तुरई, टिण्डा, खीरा आदि की फसलों में बुवाई के 25–30 दिनों के बाद नत्रजन 30 किलो (62 किलो यूरिया) व फूल आने के समय 30 किलो नत्रजन (62 किलो यूरिया) प्रति हैक्टर की दर से खड़ी फसल में देकर सिंचाई करें।
- ✦ भिण्डी की खड़ी फसल में बुवाई के 30 दिन बाद नत्रजन 30 किलो (62 किलो यूरिया) प्रति हैक्टर की दर से देवें।

पशुपालन

- ✦ बरसात से पहले अपने पशुओं को गलघोंटू व लंगड़ा बुखार रोग के टीके अवश्य लगवा लें।
- ✦ पशु चिकित्सक के परामर्श के अनुसार बरसात से पहले सभी पशुओं को कृमिनाशक औषधि पिलावें।
- ✦ पशुओं को बरसात से बचाव हेतु पूरा प्रबन्ध करें। फर्श तथा बिछावन को सूखा रखें।

परख

जून 2012 के अंक में प्रकाशित आलेख में से दो प्रश्न पूछे गये थे। सही उत्तर भेजने वाले कृषकों में से लॉटरी द्वारा चुने गये दो विजेता कृषकों के नाम हैं–

1. Jh vt; dbpkj 'kekZ
   xzk0 iks0&cYnsox<+]
   ok;k&Vgyk
   ftyk&vyoj &301410
2- Jh jkeizlkn iVhj
   iq= Jh x.kirjke iVhj
   xkz0 iks0& lkrM+k
   ftyk& pq:

इस माह के प्रश्न हैं –

प्र.1 टमाटर की फसल में फलछेदक नियंत्रण हेतु एक हैक्टर में कितने फैरोमेन ट्रेप लगाये जाते हैं ?

प्र.2 सोयाबीन में कॉलर रॉट नियंत्रण के लिए किस रसायन से बीजोपचार करें ?

rks vki Hkh mBkb;s iSu o iksLV dkMZ vkSj gesa fy[k Hksft;s bu rksuksa iz'uksa ds lgh tokc bl irs ij &

mi funs'kd d`f"k ¼lwpuk½] dejk uEcj 118] iar d`f"k Hkou] t;iqj 302005

टमाटर में फलछेदक का समन्वित कीट प्रबन्धन

फलछेदक टमाटर में लगने वाला प्रमुख कीट है। टमाटर में यह कीट जुलाई से अक्टूबर एवं फरवरी से अप्रेल तक सक्रिय रहता है। इसकी सूण्डी (लट) फलों एवं पौधों को नुकसान पहुंचाती हैं। प्रारम्भिक अवस्था में इस कीट की लटें पत्तियों को खाती हैं तथा बाद में कलियों, फूलों व फलों में छेद कर देती हैं।

समन्वित कीट प्रबन्धन

• मई–जून में खेत की 2–3 गहरी जुताई करें।

• टमाटर की 16 पंक्तियों के बाद एक पंक्ति हजारे (गेंदा) के पौधों की लगानी चाहिए। पहली और अंतिम पंक्ति हजारे की होनी चाहिए जिससे फलछेदक का प्रकोप कम होगा।

• फल छेदक का प्रकोप होने पर फेरोमोन ट्रेप लगाएं। एक ट्रेप से दूसरे ट्रेप के बीच 50 मीटर की दूरी रखें। एक है0 में 5–6 ट्रेप लगाने चाहिए। ध्यान रहे फेरोमोन ट्रेप पौधे की उंचाई से आधा या एक फीट उंचाई पर होना चाहिए।

• प्रकाश पाश का उपयोग करें जिससे फलछेदक के वयस्क उसमें आकर्षित होगें। प्रकाश पाश के नीचे केरोसीन मिला पानी भरकर रख देवें ताकि वयस्क कीट गिरकर अपने आप मर जाएं।

• अण्डा परजीवी ट्राईकोग्रामा 1,50,000 / हैक्टर की दर से पौध रोपाई के 40–45 दिन बाद से सात दिनों के अंतराल पर कम से कम चार या पांच बार छोड़ने से फलछेदक का प्रभावी नियंत्रण होता है।

• फल छेदक के नियंत्रण हेतु टमाटर की फसल में 50 प्रतिशत फूल आने पर अथवा फेरोमोन ट्रेप में 6–7 वयस्क आ जाने पर, पहला छिड़काव न्युक्लियर पोली हेड्रोसिस वाइरस (एन.पी.वी.) 250 एल.ई. प्रति है0 की दर से करना चाहिये।

• दूसरा छिड़काव बेसीलस थूरेन्जिएन्सिस (डाइपेल 8एल.), 1.5 लीटर प्रति हैक्टर की दर से पहले छिड़काव के 10 दिन बाद करना चाहिये।

• तीसरा छिड़काव दूसरे छिड़काव के 10 दिन बाद, नीम की नीम्बोली का 10 प्रतिशत सत्व (10 ग्राम प्रति लीटर पानी) की दर से करना चाहिये। छिड़काव टीपोल 0.1 प्रतिशत (1 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी) मिला कर हमेशा सुबह या शाम को करना चाहिए *अथवा* बेसीलस थूरेन्जिएन्सिस (डाइपेल 8 एल.) 1 लीटर प्रति हैक्टर+मिथोमिल 40 एस. पी., 600 ग्राम प्रति हैक्टर मिश्रण का छिड़काव दो बार करें *अथवा* ऐसीफेट 75 एस.पी. 2 किलो प्रति है0 अथवा एन्डोक्सकार्ब 14.5 एस.सी. 500 मिली दवा प्रति है0 (200–300 लीटर पानी में घोलकर) दो छिड़काव करें। पहला छिड़काव 50 प्रतिशत फूल आने पर तथा दूसरा छिड़काव इसके 15 दिन बाद करें।

सफेद लट नियंत्रण

खरीफ की अधिकांश फसलों में सफेद लट का प्रकोप होता है। इसकी प्रौढ़ अवस्था व लट अवस्था दोनों ही नुकसान करती हैं।

• मानसून या इससे पूर्व की भारी वर्षा एवं कुछ क्षेत्रों में पानी लगने पर 4 से 5 दिन तक जमीन से भृंग रात

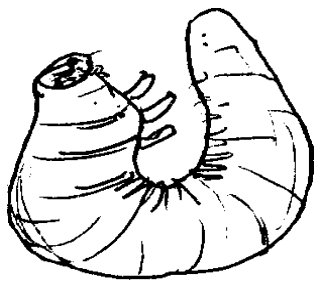

के समय निकलकर खेजड़ी, बेर, नीम, अमरूद, आम आदि वृक्षों पर बैठते हैं। इन वृक्षों पर मोनोक्रोटोफॉस 36 डब्ल्यू.एस. सी. 25 मिली लीटर या क्यूनॉलफॉस 25 ईसी 36 मिली लीटर दवा 18 लीटर (एक पीपे) पानी में मिलाकर छिड़कें।

• भृंगों के जमीन से निकलने के बाद करीब 9.00 बजे रात्रि को बाँस की सहायता से परपोषी वृक्षों पर बैठे भृंगों को हिलाकर नीचे गिरायें एवं एकत्रित कर मिट्टी के तेल मिले पानी में डालकर (एक भाग मिट्टी का तेल एवं 20 भाग पानी) नष्ट करें।

• फोरेट 10 प्रतिशत कण या क्यूनॉलफॉस 5 प्रतिशत कण या कार्बोफ्यूरॉन 3 प्रतिशत कण 25 किलो प्रति हैक्टर की दर से खरीफ फसलों में बुवाई से पूर्व कतारों में ऊर कर देवें।

• बाजरा के एक किलो बीज में 3 किलो कार्बोफ्यूरॉन 3 जी या क्यूनॉलफॉस 5 प्रतिशत कण मिलाकर बोऐं।

• मूँगफली के 80 किलो बीज को 2 लीटर क्लोरोपायरीफॉस 20 ई. सी. या क्यूनालफॉस 25 ई.सी. कीटनाशी से उपचारित कर बुवाई करें।

• मूंगफली की खड़ी फसल में सफेद लट नियंत्रण के लिये चार लीटर क्लोरोपायरीफॉस 20 ई.सी. प्रति हैक्टर की दर से सिंचाई के पानी के साथ देवें अथवा 20–25 किलो बजरी में मिलाकर भुरकाव करें तथा बाद में सिंचाई करें।

मजदूर से बना उन्नत किसान

नाम वालचन्द डांगी पिता गंगाराम डांगी, गांव–छोटा गुढ़ा, व्यवसाय हिन्दुस्तान जिंक लि0 देबारी में मजदूरी यही परिचय था श्री वालचन्द डांगी का आज से पांच–सात वर्ष पूर्व। खेती–बाड़ी से इनका दूर–दूर तक का कोई रिश्ता नहीं था।

वालचन्द खुद बताते हैं कि मैं आज से सात वर्ष पूर्व फैक्ट्री से स्वैच्छिक सेवानिवृति लेकर घर पर आया तो मेरा मन किसी कार्य में नहीं लगता था। खेती–बाड़ी की परख व जानकारी कम ही थी। मैं, हमारे साथी जी (कृषि पर्यवेक्षक) श्री नन्दलाल शर्मा से मिला और इस बारे में विस्तार से चर्चा की।

शुरू में मैंने निजी जमीन में उन्नत बीज व तकनीक का इस्तेमाल शुरू किया। पानी की कमी होने पर एक ट्यूबवैल खुदवाया जिसमें अच्छा पानी आया। कृषि विभाग द्वारा देय अनुदान पर पाईप लाईन व फव्वारा संयंत्र खरीदा। वर्मी कम्पोस्ट खाद तैयार करने लगा। साथी जी ने मुझे जैविक खेती करने की सलाह दी। अब मैं साथी जी की देख रेख में जैविक खेती करने लगा। इस बीच जब मुझे साथी जी ने महाराष्ट्र जाने वाले कृषक भ्रमण की जानकारी दी तो मैंने तुरन्त हाँ कर दी। मैंने महाराष्ट्र दौरे में नासिक में प्याज की खेती व बागवानी फसलों की खेती देखी तो मैं दंग रह गया। महाराष्ट्र की खेती की तकनीक मुझे अन्दर तक छू गई। अब मेरे अन्दर भी अच्छी व हाई–टेक खेती करने की ललक जागने लगी। मैंने एक बीघा में प्याज की उन्नत किस्म को पूर्ण जैविक विधि से बोया और 80 क्विंटल एक बीघा में पैदावार प्राप्त की। साथ ही फूलों की खेती भी अपनाई। मैंने मेरे खेत पर ग्रीन– हाउस का निर्माण किया जिसमें सब्जियों व पपीते आदि की नर्सरी लगाई व पौधों की बिक्री भी की। मैंने मेरे गांव में आत्मा योजनान्तर्गत दो समूह बनाये।

मैंने संकर मक्का की बुवाई करके 12 क्वि. एक बीघा में उत्पादन प्राप्त किया। गेहूँ की सर्वाधिक 14 क्विंटल प्रति बीघा उपज प्राप्त की।

आज श्री वालचन्द डांगी नवाचारी व कृषि की गहन जानकारी रखने वाले कृषक बन गये हैं। वे स्वयं अपने व आस–पास के गांवों में कृषकों को खेती–बाड़ी के गुर सिखाते हैं। वर्ष 2011 में आत्मा योजनान्तर्गत उदयपुर जिले के प्रथम प्रगतिशील कृषक का पुरूस्कार श्री वालचन्द डांगी को प्रदान किया गया है।

श्री वालचन्द कृषि बैठकों, कृषि अभियान, प्रशिक्षण आदि में भाग लेते हैं और एक मजदूर से प्रगतिशील कृषक बनकर खेती–बाड़ी से अच्छा लाभ कमा रहे हैं।

वर्तमान में श्री वालचन्द डांगी आत्मा योजना में एफ.ए.सी. गिर्वा के अध्यक्ष पद पर कार्यरत हैं एवं कृषकों के लिए एक प्रेरणा स्त्रोत बने हुऐ हैं।

ऐसे मंगवायें "खेती री बातां "

घर बैठे वर्षभर **खेती री बातां** अखबार मंगवाने के लिये अपने नजदीकी कृषि कार्यालय में सम्पर्क करें या आहरण वितरण अधिकारी, कृषि आयुक्तालय कमरा नं. 250, पंत कृषि भवन, जयपुर के नाम 12/– रुपये का मनीआर्डर भेजें। स्वयं का साफ–साफ डाक का पूरा पता, पिन कोड नंबर व मोबाइल नंबर अवश्य लिखें।

डाक पं.सं. RJ/JPC/M-16/2012-14

आर.एन.आई – 70296/98

izs"kd&
mi funs'kd d`f"k ¼lwpuk½
118] iar d`f"k Hkou]
t;iqj&302005

ग्वार : बदलते परिप्रेक्ष्य में चुनौती

नाम तो ग्वार परन्तु अच्छे–अच्छों के छक्के छुड़ा दिये हैं इस फसल ने। विश्व बाजार में ग्वार के भावों ने भूचाल ला दिया है। कृषक को ग्वार बोने का निर्णय सावधानीपूर्वक एवं सोच समझकर लेना चाहिए। जो किसान ग्वार की खेती करना चाहते हैं उन्हें ग्वार की उन्नत कृषि तकनीक अपनानी चाहिए। जिससे अधिकतम पैदावार प्राप्त हो सके।

उन्नत किस्में

आर.जी.सी 986 :– यह किस्म 115–125 दिन में पककर 10–15 क्विंटल प्रति हैक्टर उपज देती है। गोंद की मात्रा 28–31.4 प्रतिशत होती है एवं झुलसा रोग कम लगता है।

आर.जी.सी 1003 :– अल्पावधि वाली यह किस्म 85 से 92 दिनों में पक जाती है। बीज की उपज 8 से 14 क्विंटल प्रति हैक्टर होती है। गोंद की मात्रा 29 से 32 प्रतिशत होती है।

आर.जी.सी 1017 :–
यह किस्म 92–99 दिनों में पक जाती है। इसकी अधिकतम उपज 10–14 क्विंटल प्रति हैक्टर है।

आर.जी.सी 1031 (ग्वार क्रान्ति):– यह किस्म 110–114 दिनों में पक जाती है। किस्म की पैदावार क्षमता 11–16 क्विंटल प्रति हैक्टर तक होती है। यह किस्म अनेक रोगों के प्रति रोग प्रतिरोधकता दर्शाती है।

आर.जी.सी 1038 (ग्वार करन) ग्वार करन मध्यम अवधि (100–105 दिन) की एवं अत्याधिक शाखाओं वाली किस्म है। किस्म की पैदावार क्षमता 11–22 क्विंटल प्रति हैक्टर तक होती है। इसके दानों में गोंद 28.90–32.60 प्रतिशत पाया जाता है। यह किस्म अनेक रोगों से रोग प्रतिरोधकता दर्शाती है।

आर.जी.सी 1055 (ग्वार उदय) :– इसके गोंद की श्यानता गुणवत्ता उच्च स्तरीय होती है। इसकी उत्पादन क्षमता 11–22 क्विंटल प्रति हैक्टर तक है।

आर.जी.सी 1066 (ग्वार लाठी) :– 100 दिन की पकाव अवधि वाली यह किस्म 10–15 क्विंटल प्रति हैक्टर तक उपज देने की क्षमता रखती है। ग्वार लाठी किस्म के गोंद की श्यानता, गुणवत्ता उच्च स्तरीय होती है।

बीज एवं बुवाई

उन्नत किस्म का निरोगी बीज बोयें। बीज को उपचारित कर बोयें। वर्षा होने के साथ ही या देर से वर्षा हो तो 30 जुलाई तक बुवाई कर देना अच्छा रहता है। ग्वार की अकेली फसल हेतु 15 से 20 किलो बीज प्रति हैक्टर बोयें। देर से बुवाई करने पर बीज दर 30 किलो प्रति हैक्टर रखें। मिश्रित फसल हेतु 8 से 10 किलो बीज पर्याप्त होता है।

कीट नियंत्रण

ग्वार की फसल में तेला, जेसिड, सफेद मक्खी का प्रकोप होने पर मोनोक्रोटोफॉस 36 डब्ल्यू.एस.सी. 250 मिली लीटर अथवा डाइमेथोएट 30 ई.सी. 250 मिलीलीटर अथवा मिथाइल डिमेटोन 20 ई.सी. 250 मिलीलीटर दवा प्रति बीघा की दर से छिड़काव करें अथवा मिथाइल पैराथियान 2 प्रतिशत चूर्ण 6 किलो या फेनवेलरेट 0.4 प्रतिशत चूर्ण 5 किलो का प्रति बीघा की दर से भुरकाव करें।

रोग नियंत्रण

झुलसा/ पत्तों पर काले धब्बे (बेक्टीरियल ब्लाइट)

यह जीवाणु जनित रोग है। बीजों को स्ट्रेप्टोसाइक्लिन (0.025 प्रतिशत) से उपचारित करके बोना चाहिये। इसके लिये आठ लीटर पानी में 2 ग्राम स्ट्रेप्टोसाइक्लिन घोलकर बीजों को दो घन्टे तक डुबोकर रखा जाता है फिर बाहर निकाल कर छाया में सुखाकर बोने के काम में लिया जाता है। खड़ी फसल में इस रोग का प्रकोप होने पर 100 लीटर पानी में स्ट्रेप्टोसाइक्लिन 5 ग्राम या प्लांटोमाइसीन 50 ग्राम या एग्रीमाइसिन 30 ग्राम के हिसाब से घोलकर छिड़काव करें। झुलसा रोग की रोकथाम हेतु जाइनेब या मैन्कोजेब का (0.2 प्रतिशत) 2 ग्राम दवा प्रति लीटर पानी का छिड़काव जुलाई के अन्त या अगस्त तक करें।

तना गलन/ जड़गलन :

रोगग्रसित खेत में मई–जून माह में बुवाई के करीब एक माह पूर्व सरसों के अवशेष, डंठल, पत्ती आदि 2.5 टन प्रति हैक्टर की दर से खेत में डालकर पानी लगा दें। ग्वार के बीज को बुवाई से पूर्व बैसीलस थूरेन्जिएन्सिस 2 ग्राम प्रति किलो बीज की दर से बीजोपचार करें।

पत्ती धब्बा

यह रोग फफूंद से होता है। खेत में रोग के लक्षण दिखाई देते ही 200 ग्राम कॉपर ऑक्सीक्लोराइड एवं 10 ग्राम स्ट्रेप्टोसाइक्लिन को 100 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करना चाहिये, इससे दोनों रोगों (झुलसा व पत्ती धब्बा) का एक साथ ही उपचार हो जाता है।

इस प्रकार उन्नत कृषि तकनीक अपनाकर किसान भाई ग्वार की अधिकतम उपज प्राप्त कर सकते हैं।

निरोगी बीज-अच्छी पैदावार

बीज कृषि उत्पादन की प्रमुख कड़ी है। अगर बीज ही पूर्ण रूप से स्वस्थ नहीं होगा तो हमारी फसल का उत्पादन भी अच्छा नहीं होगा। अधिकांश रोग बीज जनित होते हैं। रोग लगने की दशा में रोकथाम पर अधिक पैसा खर्च करके भी हमारा अच्छी पैदावार लेने का सपना अधूरा सा रह जाता है। अतः बुवाई पूर्व बीजोपचार एक अत्यन्त आवश्यक सरल व सस्ती प्रक्रिया है।

मूंगफली

बीज जनित रोग जैसे कॉलर रोट से बचाव के लिए एक किलो बीज को तीन ग्राम थाइरम या दो ग्राम मैन्कोजेब या कार्बेण्डाजिम से उपचारित करें अथवा 4–8 ग्राम ट्राईकोडर्मा से उपचारित कर बोयें।

बाजरा

अरगट रोग नियंत्रण हेतु 20 प्रतिशत नमक के घोल (5 लीटर पानी में एक किलोग्राम नमक) में बीज को पांच मिनिट डुबोयें, हिलाकर साफ पानी से धोकर बचे हुए बीज को छाया में सुखायें। बीज जनित रोगों के नियंत्रण के लिए एक किलो बीज को 3 ग्राम थायरम से उपचारित करें, इसके बाद बीज को एजेटोबेक्टर व पी.एस.बी. कल्चर से उपचारित कर बोयें।

मक्का

बीज को 3 ग्राम थाइरम प्रति किलो बीज की दर से उपचारित करें।

तुलासिता (डाउनी मिल्ड्यू) प्रभावित क्षेत्रों में बीज को मेटालेक्सिल दैहिक कवकनाशी 4 ग्राम दवा प्रति किलो बीज की दर से उपचारित करें। इसके बाद बीज को एजेटोबेक्टर 600 ग्राम (3 पैकेट) + पीएसबी कल्चर 600 ग्राम (3 पैकेट) प्रति हैक्टर की दर से उपचारित करें।

सोयाबीन

बीज जनित रोग उखटा, जड़ गलन के नियंत्रण के लिए ट्राइकोडर्मा कल्चर 6–8 ग्राम प्रति किलो बीज अथवा 3 ग्राम थाइरम या 3 ग्राम कार्बेन्डाजिम प्रति किलो बीज की दर से बीजोपचार करें। बाद में राइजोबियम तथा पीएसबी कल्चर से उपचारित करें।

सोयाबीन में कॉलर रॉट की रोकथाम के लिए कार्बोक्सिल 75 डब्ल्यू.पी. 2 ग्राम दवा प्रति किलो बीज की दर से उपचार करें।

ग्वार

जीवाणु अंगमारी रोग की रोकथाम हेतु एक किलो बीज को 250 पी.पी. एम. एग्रीमाइसीन (1 ग्राम दवा प्रति 4 लीटर पानी) अथवा 100 पी.पी.एम. स्ट्रेप्टोसाइक्लिन (1 ग्राम दवा प्रति 10 लीटर पानी) के घोल में 5 घंटे भिगोकर उपचारित करें।

उड़द व अन्य खरीफ दलहन

बीज जनित रोग उखटा, जड़गलन से बचाव हेतु 2 ग्राम थाइरम एवं 2 ग्राम पी.सी.एन.बी. (ब्रेसीकोल) या 3 ग्राम थाइरम या केप्टान या कार्बेन्डाजिम से प्रति किलो बीज की दर से बीजोपचार करें। इसके बाद बीज को राइजोबियम तथा पी.एस. बी. कल्चर से उपचारित करें।

स्वत्वाधिकारी कृषि विभाग राजस्थान सरकार के लिये प्रकाशक एवं मुद्रक आयुक्त कृषि, कृषि विभाग राजस्थान, जयपुर द्वारा कृषि सूचना मुद्रणालय जयपुर से मुद्रित और पंत कृषि भवन, जनपथ, जयपुर से प्रकाशित।

प्रकाशक	– श्री भवानी सिंह देथा
सम्पादक	– श्री हीरेन्द्र शर्मा
सह सम्पादक	– कु. पूनम चौधरी
परामर्श	– श्री के. आर. यादव
डिजाइन	– श्री आर. मैसी